पाठ–10

दोहे

–कबीर

पाठ की संरचना

10.1 आइए शुरू करें
10.2 उद्देश्य
10.3 मूल पाठ
10.4 आइए समझें
10.5 भाषा-शैली

10.1 आइए शुरू करें

हमारे देश में समय-समय पर महान भक्त जन्म लेते रहे हैं। कुछ भक्त ऐसे भी हुए हैं, जो कवि के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। जैसे– कबीर, नानक, सूर, तुलसी, मीरा आदि। इन भक्तों ने अपने विचारों से समाज को सही राह दिखाई। इन्होंने आपसहारी समझदारी, संतोष, सादगी, करुणा और सच्चाई का संदेश दिया। इन भक्तों ने किसी सांसारिक सत्ता यानी किसी राजा या बादशाह की अधीनता नहीं स्वीकारी। ये ईश्वर को सर्वशक्तिमान मानते थे, इसीलिए किसी से डरते नहीं थे। ये निर्भय थे। कबीर इन भक्तों में सबसे अलग हैं। वे विद्रोही हैं और प्रेमी भी, भक्त भी और समाजसुधारक भी । वे ईश्वर के

निराकार रूप के उपासक थे। वे मंदिर-मस्जिद के बजाए खुद के भीतर ईश्वर का वास मानते थे। उन्हें धर्म के नाम पर किसी भी तरह का दिखावा स्वीकार नहीं था। जाति, धर्म या धन के आधार पर कोई ऊँचा है, और कोई नीचा; ऐसे किसी भी विचार के वे विरोधी थे। वे संतोष, प्रेम और विवेक को सबसे बड़ा धन मानते थे। इस पाठ में हम कबीर के कुछ दोहों का अध्ययन करेंगे और उनके विचारों से परिचित होंगे ।

10.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- दोहों का अर्थ बता सकेंगे
- दोहों से मिलनेवाली सीख का उल्लेख कर सकेंगे
- दोहों से साम्य रखनेवाले अन्य दोहे उद्धृत कर सकेंगे
- कबीर की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे
- कबीर के व्यंग्य की विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

कबीर के दोहों के ऑडियो कैसेट आसानी से मिल जाते हैं । आप उन्हें ध्यान से सुनें और दोहों को याद करने का प्रयास करें । फिर, अपनी स्मृति के आधार पर उनके किन्हीं चार दोहों को लिखें-

1. .....
   .....

2. .....
   .....

3. .....
   .....

4. .....
   .....

10.3 मूल पाठ

सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै ।।1।।

कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाउँ।
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाउँ ।।2।।

कबीर घास न नींदिये, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि में, खरा दुहेला होइ ।।3।।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एके आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ ।।4।।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौ सुख होइ ।।5।।

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोइ ।।6।।

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहि।
ऐसैं घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहि ।।7।।

कबीर यहु जग कुछ नहीं, षिन षारा षिन मीठ।
काल्हि जु बैठा माड़िया, आज मसांणां दीठ ।।8।।

प्रेम न बारी उपजै, प्रेम न हाट बिकाइ।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाइ ।।9।।

जेते तारे रैणि के, तेते बैरी मुझ।
धड़ सूली सिर कंगुरै, तऊ न बिसारौं तुझ। ।10।।

बोध प्रश्न

अभी आपने कबीर के दोहों को पढ़ा। अब आप इस पाठ से कुछ प्रश्नों के उत्तर दें–

1. कबीर स्वयं को किसका कुत्ता कहते हैं?

   .....

2. कबीर ने किसकी निंदा नहीं करने के लिए कहा है?

   .....

3. कस्तूरी को कौन ढूँढ़ता है?

   .....

4. हाट में क्या नहीं बिकता?

   .....

10.4 आइए समझें

आइए अब इन दोहों को फिर से पढ़ लें–

दोहा–1

यह संसार भी बहुत विचित्र है। लोग अपनी अज्ञानता में भी मग्न रहते हैं। वे सत्य से परिचित होना ही नहीं चाहते। कबीर ऐसी स्थिति को देखकर बहुत दुख का अनुभव करते हैं। वे कहते हैं कि सारा संसार स्वयं को सुखी महसूस करता है। उसके लिए सुख का अर्थ केवल खाना–पीना और भोग–विलास है। व्यक्ति सांसारिक खुशियों को ही सच्चा सुख मानता है। धन–दौलत को ही वह सबसे बड़ी चीज मानता है। वह इन खुशियों में मग्न रहता है।

कबीर की स्थिति इसके विपरीत है। उनका विवेक जाग्रत है। वे जानते हैं कि यह भोग–विलास, धन–संपत्ति के लिए भागमभाग, लोभ; सब व्यर्थ है। संसार की सभी चीजें यहीं रह जाएँगी। ये सब की सब नष्ट होनेवाली हैं। इनमें से ऐसा कुछ भी नहीं है, जो स्थाई हो। लेकिन लोग इसे समझने के लिए तैयार नहीं।

कबीर यह स्थिति देखकर अत्यंत दुखी हैं। अन्य लोगों की तरह उन्हें चैन की नींद नहीं आती। उनका विवेक कहता है कि यह धन–संपदा, वैभव, प्रतिष्ठा, कुछ भी स्थायी नहीं है। दुनियावाले ऐसी स्थिति में भी चैन से कैसे रह लेते हैं? कबीर को यह सब देखकर रोना आता है।